

मरक सरक ल'बा-ज्होवालीचे विषयाये जानेचा आहा (०-३ वर्षां)

गर्भत थका शिशुटोचे चाल-चलन करिं आहे। नवम माहार शेवर फालवपरा शिशुटोचे मूरटो तलालै करि थाके। एই अवस्थात शिशुटो डूमिठ हव्हर वाबे जग्घापथर उच्चरत थाकेहि। एই समयात शिशुटोचे उच्चता १०-२० इंचिं आक ओजन ३ के.जि. इय। एইदरे गर्भधारणे परा २८० दिनावे पिछत वा ९ माहावे पिछत शिशु जन्म इय।

#### १.४ शिशुकालचे वैशिष्ट्यसमूह (Characteristics of babyhood) :

साधारणते केंचुवाचे एवढे वयसवे पिछवे पराई चारिओदिशत किंचुमान विशेष परिवर्तन होवा देखा याय। केंचुवा अवस्थात शिशु सम्पूर्णकपे आनव ओपरत निर्भवशील है थाके। किंतु वयस वाढी योवाचे लगे लगे शिशु आज्ञानिर्भवशील हव्हलै शिके। एইदरे शिशुचे शारीरिक, मानसिक दिशवे विकाश होवाचे लगते शारीरिकभाबे नियन्त्रण क्रमतावे लाभ करे। एই वयसवे शिशुरे सिहऱ्याचे चारिओफाले परिवेशवे विषयाये जानिवलै इच्छा करे आक लाहे लाहे सामाजीकरण प्रक्रियावे आवस्तु इय। चालुकीया अवस्थार शेवर फाले शिशुरे तिनी-चारिटा शब्दयुक्त असम्पूर्ण वाक्य कव्हलै आवस्तु करे। एने धरणे वैशिष्ट्यसमूह चालुकीया अवस्थार शिशुरे क्रेत्रत देखा पोरा याय।

एलिजाबेथ बि. हर्लॉक (Elizabeth B. Hurlock)-ए शिशुरे वैशिष्ट्यसमूह तलत दिया धरणे व्याख्या करिहे— एहोवाचे चमुके आलोचना करा है—

१। शिशु अवस्था हैचे शिशुरे वास्तविक भेंटी गढाचे वयस। कियनो एই समयाते शिशुरे आचरणे विभिन्न नमूना, विभिन्न धरणे मनोवृत्ति आक आवेग प्रकाशवे नमूनासमूह प्रतिष्ठित इय।

२। शिशु अवस्था हैचे वृद्धि स्फुरण आक

परिवर्तनवे समय। एই समयात शिशुरे शारीरिक आक मानसिक वृद्धि द्रुत गतित इय। इयाचे लगे लगे शिशुरे दैत्यक गठन आक सामर्थतावे परिवर्तनावे होवा देखा याय। कियनो जन्मावे पिछते शिशुरे मूरटोचे लगते शारीरिक ओपर अंश तलावे अंशताके डाऊवे हय। किंतु लाहे लाहे शिशुरे ओपर ओजन उच्चता वृद्धिरे लगते शारीरिक अनुपातवे परिवर्तन हय। एই वयसत शिशुरे वृद्धि द्रुतगतित इय। शारीरिक वृद्धिरे लगते अन्यान्य दिशवे वृद्धि आक विकाशो समानुवालाभावे आवस्तु इय।

३। शिशु अवस्था हैचे निर्भवशीलता त्वास पोवाचे वयस। कियनो वयस वृद्धिरे लगे लगे शिशुरे निजवे शारीरिक नियन्त्रण करिवलै शिके। फलत शिशुरे आनव सहाय नोलोराकै बहिर, थिय हव्ह, खोज काढिवे आक चिवि वगावे पावे। एই समयात शिशुरे भाववे तादान-प्रदानवे योगेदी वा कथावतवाचे योगेदी निजवे प्रयोजन समूह व्यक्त करिवे परा इय। सेहवावे आज्ञानिर्भवशीलता वृद्धि पाय।

४। स्वकीयता विकाशवे वृद्धिरे समय : शिशु अवस्थाक स्वकीयता वृद्धिरे समय बुलिओ कोरा इय। कियनो एই समयात शिशुरे आग्रह आक सामर्थता अनुभायी वृद्धि विकाश हव्हलै धरे। शिशुरे निजस्व कप आक आचरणवे नम्नात स्वकीयता प्रकाश पाय। स्वकीयता वृद्धिरे लगे लगे प्रत्येक शिशुके एकोजन व्यक्ति हिचावे परिचित करावे प्रयोजनीयतावे वृद्धि पाय। एই समयात शिशुरे माजत स्वकीयतावे विभिन्नता देखिवलै पोरा याय।

५। शिशु अवस्था हैचे सामाजीकरणवे आवस्तुणि। निचेही सरक अवस्थात शिशुसकल स्वार्थकेन्द्रिक वा अहंकेन्द्रिक हय यदिओ पिछलै शिशुरे सामाजिक गोटवे एटा अंश हव्ह विचावे। सेहवावे शिशुरे येतिया अकलशारीराकै थाकिवे लगा इय, तेतिया

প্রতিবাদ করে।

৬। শিশু অবস্থা হৈছে লিঙ্গ ভূমিকা ধৰণৰ আৰম্ভণিৰ সময়। সাধাৰণতে শিশুৰ জন্মৰ পিছৰে পৰাই ল'বাক ল'বা হিচাবে আৰু ছোৱালীক ছোৱালী হিচাবেই মানি লোৱা হয়। সেইবাবে ল'বাক নীলা ৰঙৰ সাজ-পোচাক আৰু ছোৱালীক গুলপীয়া ৰঙৰ সাজ-পোচাক পিছাই লিঙ্গ ভূমিকা নিৰ্ণয় কৰা হয়।

৭। শিশু অবস্থাটো হৈছে এটা আকৰ্মক বয়সৰ সময়। যদিও এই বয়সত শিশুৰ মূৰ, গা, হাত-ভৰি আদিৰ আকাৰ সমানুপাতিক নহয়, তথাপি ডাঙৰ মূৰ, বাঢ়ি অহা পেট, সৰু হাত ভৰি আদিৰ সৈতে অধিক আকৰ্মণীয় হয়। তেতিয়া শিশু অসহায় অবস্থাত থাকে আৰু আনৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল হয়, তেতিয়া ডাঙৰে শিশুক আকৰ্মণীয় কপত দেখা পায়।

৮। শিশু অবস্থা হৈছে সৃজনীশীলতাৰ আৰম্ভণিৰ সময়। এই বয়সৰ শিশুৰে নিজৰ পৰিবেশ নিয়ন্ত্ৰণ

কৰিব নোৱাৰে আৰু তেওঁলোকৰ মাংসপেশীৰ সু-সমন্বয়ৰ অবিহনে কোনো কাম ভালদৰে কৰিবলৈ সমৰ্থ নহয়। এইদৰে শিশুৰে যি ধৰণৰ কাৰ্য কৰে তাকে সৃজনাত্মক কাৰ্য আখ্যা দিয়া হয়।

(৯। শিশু অবস্থা হৈছে সংকটপূৰ্ণ বয়সৰ সময়। জীৱনৰ সকলো সময়েই সংকটেৰে ভৱপূৰ যদিও হাৰল'কে শিশু অবস্থাটোক অধিক সংকটপূৰ্ণ বুলি কৈছে। এই সংকট শাৰীৰিক আৰু মানসিক দুই ধৰণৰ হ'ব পাৰে। শাৰীৰিক সংকটৰ ভিতৰত বেমাৰ-হ'ব পাৰে। শাৰীৰিক সংকটে শিশুক শাৰীৰিক ভাৱে আজাৰ, দুৰ্ঘটনা আদিয়ে সমস্যাৰ সৃষ্টি কৰিব পাৰে। কিয়নো এনে ধৰণৰ সংকটে শিশুক শাৰীৰিক ভাৱে অক্ষম কৰিব পাৰে বা কেতিয়াৰা মৃত্যুও হ'ব পাৰে। তাৰোপৰি শিশুক যদি সৰুৰে সৰা উপযুক্তি আচৰণ, মনোবৃত্তি আদিৰ বিষয়ে ভালদৰে শিক্ষা দিয়া নহয়, তেতিয়া শিশুৰ কিছুমান মানসিক সংঘাটে দেখা দিব পাৰে। )

## মূলভাৱ

- \* শিশুৰে বিভিন্ন কৌশলসমূহ আয়ত্ত কৰি ভুল-শুল্ক বিচাৰ কৰিব পৰা অবস্থা পোৱাৰ লগতে ভালদৰে ভাৱৰ আদান-প্ৰদান কৰিব পাৰিবলৈই আত্মনিৰ্ভৰশীল হৈ পাৰে।
- \* মাতৃগৰ্ভত থকা অবস্থাটো শিশুৰ বৃদ্ধি বিকাশৰ প্ৰক্ৰিয়া চলি থাকে।
- \* মাতৃগৰ্ভত শিশু অৎকুবিত হোৱাৰ দিনবে পৰা জন্ম হোৱা সময়লৈকে এই গোটেই সময়ক প্ৰাক-প্ৰসৃতি কাল বোলা হয়।
- \* প্ৰাক-প্ৰসৃতি কালৰ তিনিটা স্তৰ আছে— ডিম্বাগুৰ স্তৰ, জন্মৰ স্তৰ আৰু গৰ্ভস্থ শিশুৰ স্তৰ।
- \* চালুকীয়া অবস্থাৰ শিশুৰ কেতবোৰ বিশেষ বৈশিষ্ট্য আছে।